AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

झारखंड राज्य निर्माण आंदोलन तथा आंदोलनकारी

ORIGINAL ARTICLE

Authors
मोनिका बक्शी
शोधार्थी, इतिहास विभाग

डॉ. अशोक कुमार मंडल
सह प्राध्यापक, इतिहास विभाग

प्रभात कुमार साहा
शोधार्थी, इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

झारखंड राज्य निर्माण आंदोलन की कहानी बहुत लंबी है जिसमें कई लोगों ने अपना–अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। झारखंड राज्य जनजातीय समुदाय की बहुलता के लिए विख्यात है जो जनजातीय संस्कृति तथा प्राकृतिक वातावरण के दृष्टिकोण से अद्वितीय स्थान रखता है। झारखंड में प्राकृतिक संपदाओं की प्रचुर मात्रा होने के कारण उद्योग धंधों तथा पूंजीपतियों के आकर्षण का केंद्र सदियों से बना है तथा इसी कारण से जनजातीय समुदाय तथा यहां के मूल निवासी का शोषण भी जारी रहा है। देश के आजादी के पश्चात् भी झारखंड महाजनों, पूंजीपतियों तथा भ्रष्ट सरकारों का गुलाम बना रहा। जब शोषण अपने प्रकाष्ठा पर पहुंचा तब जनजातीय समुदाय और मूल वासियों द्वारा विद्रोह किया जाने लगा तथा इस विद्रोह में उन्हें राह दिखाने में कई आंदोलनकारियों ने अहम भूमिका निभाई है। इन आंदोलनकारियों में जयपाल सिंह मुंडा, एन. ई. होरो, विनोद बिहारी महतो, ए० के० राय, बागुन सुबोई, रामदयाल मुंडा तथा शिबू सोरेन प्रमुख थे।

मुख्य शब्द

शोषण, जनजाति समुदाय, विद्रोह, संस्कृति, झारखंड, लालखंड.

विषय वस्तु

झारखण्ड अलग राज्य निर्माण आन्दोलन के पीछे कई कारण विद्यमान थे जिसे समझने के लिए हमें यहाँ कि भौगोलिक पृष्ठभूमि को भी समझना चाहिए। अविभाजित बिहार की जनजातीय जनसंख्या का 93 प्रतिशत यहाँ रहता है, फिर भी जनजातियाँ झारखण्ड की सम्पूर्ण आबादी में केवल 28 प्रतिशत है। क्षेत्र के केवल 37 प्रतिशत भू–भाग का है। इसे जनजातीय क्षेत्र कहा जा सकता है। झारखण्ड में जनजातियों कि बहुलता 58.8 प्रतिशत है जो अन्य जिलों की अपेक्षा सबसे अधिक है। दुसरे स्थान पर सिंहभूम है जिनका 46 प्रतिशत संत है, 36 प्रतिशत संताल परगना में है और शेष जिलों में 10 प्रतिशत के बीच है।

झारखण्ड अलग राज्य निर्माण आन्दोलन को आर्थिक समस्याओं का राजनितिक विस्फोट कहा जाना चाहिए। यह आन्दोलन आदिवासियों के शोषण का परिणाम था। झारखण्ड खनिज सम्पदा एवं प्राकृतिक संसाधनों से आच्छादित होने के बावजूद भारत का अत्यधिक पिछड़ा भाग रहा है। बिहार के राजस्व का तीन चौथाई हिस्सा यहीं

से प्राप्त किया जाता था। इसके बावजूद झारखण्ड के विकास हेतु राजस्व का केवल पांचवां भाग ही यहाँ खर्च किया जाता था। सरकार द्वारा अधिग्रहित भूमि का मुआवजा भी कम दिया जाता था। इन्हीं कारणों से यहाँ कि जनजातियाँ परियोजनाओं से भयभीत होने लगे एवं इसका विरोध करने लगे। 85 प्रतिशत सरकारी नौकरियां, शैक्षणिक संस्थाओं, निजी प्रतिस्ठानों एवं सार्वजनिक प्रतिष्ठानो पर 15 प्रतिशत बिहारियों का कब्जा था। सन् 1963 से 1973 ई. तक झारखण्ड अलग राज्य निर्माण आन्दोलन मृत अवस्था में बना रहा। एन. ई. होरो, बी. पी. केसरी तथा राम दयाल मुंडा जैसे बुद्धि जीवियों ने इसे जीवित रखने कि कोशिश की। 1973 ई. में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा की स्थापना हुई। झारखण्ड आन्दोलन का रूप देख कर 1987 ई. में भाजपा ने अलग राज्य की मांग का समर्थन किया। 1989 ई. में 24 सदस्ययी झारखण्ड विषयक समिति का गठन किया गया। समिति ने झारखण्ड क्षेत्र विकास परिषद के गठन का प्रस्ताव किया। सितम्बर 1994 ई. में झारखण्ड क्षेत्र स्वशासी परिषद (जैक) के गठन का निर्माण किया गया। बिहार विधान सभा में प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया एवं 15 नवम्बर 2000 ई. को देश का 28 वां राज्य झारखण्ड अस्तित्व में आ गया।

शोध विधि

शोध विधि मुख्य रूप से ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक तथा व्याख्यात्मक है। तथ्यों के संग्रहण हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। प्रकाशित तथा अप्रकाशित पुस्तक के शोध पत्र समकालीन पत्र–पत्रिका आदि की सहायता ली गई है। इसके साथ–साथ झारखंड आंदोलन से जुड़े अन्य तथ्यों का संकलन कर विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

झारखंड अलग राज्य निर्माण का आंदोलन तथा स्वरूप

झारखंड राज्य निर्माण आंदोलन का श्री गणेश जयपाल सिंह मुंडा के इस आंदोलन में कदम रखते ही हो गया था। देखा जाए तो इस राज्य की मांग काफी पहले से की जा रही थी, किंतु जयपाल सिंह मुंडा का आंदोलन में योगदान के फलस्वरुप अलग राज्य निर्माण आंदोलन सक्रिय सिद्ध हुआ।

1929 में छोटानागपुर आदिवासी महासभा के अध्यक्ष जयपाल सिंह मुंडा बने।[1] सर्वप्रथम झारखंड राज्य निर्माण का नारा आदिवासी महासभा के मंच से ही गूंजा था। छोटानागपुर उन्नति समाज का स्वरूप भी आदिवासी महासभा था।[2] कई आंदोलनकारियों ने अपने–अपने संगठनों को आपस में जोड़कर आदिवासी महासभा की नींव रखी। इस सभा का मुख्य लक्ष्य झारखंड राज्य निर्माण था। 1950 में आदिवासी महासभा का नाम बदलकर झारखंड पार्टी कर दिया गया। 1953 में "राज्य पुनर्गठन आयोग" की स्थापना हुई तब झारखण्ड पार्टी ने अलग राज्य निर्माण का प्रस्ताव रखा। चीन में बिहार, बंगाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश के जिलों को सम्मिलित कर कुल 16 जिलों से झारखंड राज्य निर्माण की बात की गई। इस दौरान कई सारे आंदोलनकारी उभर कर सामने आए एवं उन्होंने कई पार्टियों का गठन किया। 1969 में नक्सली संगठनों ने भी झारखंड में अपने पैर पसारे।[3] 1973 में "झारखंड मुक्ति मोर्चा" का गठन हुआ जिसमें इसके संस्थापक अध्यक्ष विनोद बिहारी महतो को और सचिव शिबू सोरेन को बनाया गया।

झारखंड अलग राज्य निर्माण आंदोलन के मुख्य आंदोलनकारी

झारखंड राज्य कई चरणबद्ध आंदोलनों की देन है, इनमें कई सारे आंदोलनकारी उभर कर सामने आए। उनका मुख्य उद्देश्य झारखंड में बसे लोगों पर हो रहे राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक शोषणों से उन्हें मुक्ति दिलवाने था। जिन आंदोलनकारियों ने आंदोलन की अगुवाई की उन्हें झारखंड आंदोलनकारी कहा गया।

जयपाल सिंह मुंडा

झारखण्ड में प्रथम आंदोलनकारी जयपाल सिंह मुंडा थे। ये मरांग गोमके यानि "ग्रेट लीडर" के नाम से लोकप्रिय हुए।[4] जयपाल सिंह मुंडा के राजनिति में प्रवेश से ही झारखण्ड अलग राज्य निर्माण का आन्दोलन जोर पकड़ा। इनका जन्म 3 जनवरी 1930 में टकरा पाहन टोली गांव 'खूंटी थाने' में हुआ था। उनके पिता मुंडा समाज के पाहन थे जिनका नाम अमरू पाहन था एवं माता का नाम राधामुनी था। जयपाल सिंह मुंडा 8 भाई बहन थे जिनमें

उनका स्थान दूसरे नंबर पर था। सन 1911 में संत पॉल स्कूल रांची में उनका दाखिला हुआ। वहां के प्रिंसिपल केनोन कॉसग्रेव जयपाल सिंह के गुनों एवं प्रतिभा से काफी प्रभावित थे। 1918 में जब कॉसग्रेव रिटायर हुए तो उन्हें अपने साथ इंग्लैंड ले गए। वहां कंटरबरी के संत अगस्टिन कॉलेज में धार्मिक पढ़ाई और पादरी बनने के लिए उनका दाखिला करवाया गया। दो टर्म की शिक्षा प्राप्ति के बाद वहां के वार्डन बिशप आर्थर मेसाकानाइट में संत जॉन कॉलेज के प्रेसिडेंट डॉ. जेम्स को जयपाल सिंह के प्रतिभाओं से अवगत कराते हुए उन्हें ऑक्सफोर्ड में दाखिला करवा दिया गया। 1926 में उन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए ब्लू हॉकी का खिताब अपने नाम किया। 1928 में ग्रीष्मकालीन ओलंपिक के स्वर्ण पदक भी अपने नाम किया।[5] अपने देश तथा खेल के लिए उन्होंने आईसीएस जैसा प्रतिष्ठित अवसर को भी दरकिनार किया। वे एक जाने माने शिक्षा वेद, लेखक, पत्रकार, संपादक एवं राजनीतिज्ञ थे, उन्होंने 20 जनवरी 1939 में छोटानागपुर आदिवासी महासभा के अध्यक्ष के रूप में अपनी राजनीतिक जीवन का आरंभ किया। बिहार में जिला परिषदों का चुनाव होना था जिससे लगभग 10 दिन पहले ब्रिटिश सरकार द्वारा आदिवासियों को धोखे से सिमको बुलाकर अंधाधुंध फायरिंग करते हुए सेंकड़ों लोगों को मार दिया गया, जिससे आहत होकर जयपाल सिंह ने तूफानी दौरा शुरू किया। जयपाल सिंह 1946 में संविधान सभा के लिए चुने गए।[6] झारखंड अलग राज्य निर्माण एवं उनके विकास के लिए उन्होंने जोरदार दलीलें दी उन्होंने अपने दलीलों से यह स्पष्ट किया कि अलग राज्य निर्माण से ही यहां की जनजातियों का जीवन सुगमता से निर्वाह हो सकता है, क्योंकि उनके अधिकारों का हनन दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, जिसकी रक्षा करना अति आवश्यक है। वे 1952–1967 तक लगातार 4 बार संसद रहे। वे उन लाखों आदिवासियों का प्रतिनिधित्व करते रहे, जिनके साथ हजारों सालों से दुर्व्यवहार हुआ है। अंततः 1 जून 1963 ई० में उन्होंने आदिवासी महासभा का विलय झारखण्ड पार्टी कांग्रेस में कर दिया।

विनोद बिहारी महतो

विनोद बिहारी महतो झारखंड की संस्कृति के प्रेमी थे, लोक नृत्य, छऊ नृत्य एवं झूमर में उनकी विशेष रूचि थी, उन्होंने पढ़ो और लड़ो का नारा दिया। इनका जन्म 23 सितंबर 1923 में धनबाद जिले के बड़ादाहा ग्राम में हुआ था।[7] उनके पिता का नाम महेंद्र महतो और माता का नाम मंदाकिनी महतो था। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा DAV झरिया से, I.A कि पढ़ाई पी. के. राय मेमोरियल से, स्नातक की डिग्री रांची कॉलेज से एवं पटना लॉ कॉलेज से कानून की डिग्री अर्थात् वकालत की डिग्री लेकर 1956 में धनबाद कोर्ट में वकालत शुरू की उस समय धनबाद कोर्ट में सिर्फ बंगाली वकीलों की ही भीड़ थी। विनोद बाबू जनजातीय समाज के एकमात्र वकील थे वे दलित और पिछड़ी जाति के हित के लिए लड़ते थे तथा केस जीतने के बाद ही अपनी फीस लिया करते थे। उन्हें भू–अर्जन कानून का विशेषज्ञ माना जाता था। जनजातीय समाज के लोगों को डरा धमकाकर उनकी जमीन अधिग्रहित कर ली जाती थी तथा उनका मुआवजा भी उन्हें न के बराबर दिया जाता था। वहां के गरीब आदिवासी, मूलवासी किसान वर्ग, सूबेदारों, महाजनों के चंगुल में फंसते जा रहे थे। महिलाओं पर अत्याचार बढ़ता जा रहा था सामाजिक कुरीतियों का विरोध करते हुए विनोद बाबू ने 1967 में एक सामाजिक संगठन बनाया जिसे "शिवाजी समाज" के नाम से जाना जाता है।[8] विनोद बिहारी सामाजिक चेतना जागृत करने के साथ–साथ उनके उत्थान के लिए भी कार्य करने लगे। शिक्षा के विकास को सर्वोत्कृष्ट साधन मानकर उन्होंने लोगों को पढ़ने के लिए व्यक्तिगत धन ही मुंहया नहीं करवाया वर्णन सामाजिक एकता को स्थापित करते हुए उसे सशक्त किया और शिक्षण संस्थानों में कई स्कूलों को आर्थिक सहायता दी। इन्हीं बीच उनका मुलाकात कई राजनीतिक दलों के नेताओं एवं समाज सुधारकों से हुई जिससे राजनीतिक महत्ता उनके हृदय में अंगड़ाई लेने लगी। वे समाज और झारखंड राज्य के लिए कुछ करने को बेताब होने लगे। झारखंड खनिज संपदा से अच्छादित क्षेत्र है जिसका लाभ भारत के निवासी ले रहे थे किंतु झारखंड के निवासी इससे वंचित थे। ना तो उन्हें रोजगार मिला, ना उनके हक अतः विनोद बाबू सामाजिक उत्थान के साथ–साथ राजनीतिक विकल्प के आधार पर झारखंड के नवनिर्माण के लिए वे कटिबद्ध हो गए। वे जनजातियों के हितों की रक्षा हेतु 25 सालों तक कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य रहे। 1972 में झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया जिनके अध्यक्ष विनोद बिहारी महतो बने। वे व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन

की ऐसी पृष्ठभूमि तैयार की जिसमें शिक्षित एवं समृद्धि झारखंड की कल्पना को मजबूत आधार बना दिया गया। झारखंड के अग्रणी नेता जनजातीय समाज के शुभचिंतक प्रहरी इत्यादि होने के कारण उन्हें झारखंड के लाल से भी संबोधित करते हैं।

ए. के. राय

ए. के. राय का पूरा नाम अरुण कुमार राय था लोग इन्हें प्यार से राय दा के नाम से भी पुकारा करते थे। इनका जन्म पूर्वी बंगाल के (अब बांग्लादेश) राजशाही जिले के अंतर्गत सुपरा गांव में 15 जून 1935 ईस्वी में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा राजशाही में ही हुई, दसवीं की शिक्षा रामकृष्ण मिशन के बेलूर मठ से पूरी की, इंटर और स्नातक इन्होंने सुरेंद्रनाथ बैनर्जी कॉलेज से एवं कोलकाता विश्वविद्यालय से एम. एस. सी से गोल्ड मेडलिस्ट रहे।[9] फिर ए० के० राय ने इंडस्ट्रियल हाउस कोलकाता में डॉ० क्षितिज चक्रवर्ती के निर्देशन में शोध कार्य करने लगे।[10] वे 1961 में केमिकल इंजीनियर बनकर धनबाद आए। इस दौरान उनके जीवन ने नया मोड़ लेना प्रारंभ किया। प्लांट में काम करते हुए उन्हें मजदूरों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान हुआ।[11] 9 अगस्त 1966 को मजदूरों ने बंद का आवाहन किया जिसका ए. के. राय ने पूर्ण समर्थन किया जिस कारण उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। अब वे खुलकर मजदूरों के लिए आंदोलन करने लगे उन्होंने मजदूरों के हित में अपने विचारों का "वोट और क्रांति" के नाम से लेख लिखें। इनके द्वारा कई सारी पुस्तकें एवं पत्र–पत्रिकाएं भी लिखी गई जिनमें प्रमुख हैं:

झारखंड और लालखंड, योजना और क्रांति, अलगाववाद और मार्क्सवाद, कम्युनिस्ट घोषणा – पत्ररू एक विवेचन नई जन क्रांति इत्यादि। इन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को दिशा देने का काम किया। ए. के. राय ने अपनी आंदोलन की शुरुआत शिक्षा पर बल देते हुए किया। सन् 1967 में उन्होंने साथी नामक संगठन का निर्माण किया[12] उन्होंने अपने साथ कुछ लोगों को जोड़ा एवं गरीब बच्चों को पढ़ाने के लिए रात्रि पाठशाला की शुरुआत की।[13] फिर उन्होंने कोयला मजदूरों को इकट्ठा करके बिहार कोलियरी कामगार यूनियन बनाया यह संगठन आज भी जीवित है एवं इसके माध्यम से मजदूरों के हितों की रक्षा होती है 29 अप्रैल 1972 को उन्होंने मार्क्सवादी समन्वय समिति का गठन किया जिसके माध्यम से वे आम जनता को राजनीतिक रूप से जागरूक कर सके एवं उनके हितों की रक्षा कर सके।

शिबू सोरेन

शिबू सोरेन का जन्म 11 फरवरी 1944 को हजारीबाग जिला के नेमरा गांव में हुआ जो अब रामगढ़ जिला में पड़ता है उनके बचपन का नाम शिवलाल मांझी था। पिता सोबरन मांझी की हत्या हो जाने से आघात हुए तथा झारखंड में आदिवासियों के उत्थान तथा शोषण के खिलाफ आवाज उठाने में इन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई।[14] इन्होंने समाज कल्याण तथा आदिवासी उत्थान हेतु कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं जिससे इनकी लोकप्रियता दिशोम गुरु के नाम से काफी बढ़ गई। शिबू सोरेन ने शराब बंदी के लिए "कलाली तोड़ो झारखंड छोड़ो" का नारा देते हुए शराब दुकान बंद करने तथा बाहरी लोगों को झारखंड छोड़ने का आवाहन दिया।[15] साथ ही इन्होंने 19 सूत्री कार्यालय चलाया जिसमें आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक विकास को लक्ष्य बनाया।[16] आदिवासी अज्ञानता तथा परंपरागत रूढ़िवादी विचारधारा के कारण शिबू सोरेन को आदिवासी सामाजिक विकास कार्यक्रम के दौरान कई कठिनाइयां तथा असफलताओं का सामना भी करना पड़ा तथा उन्होंने सफलतापूर्वक इसे पूर्ण किया।[17] यह आंदोलन आगे चलते हुए 1972 "झारखंड मुक्ति मोर्चा" का गठन किया गया जिसके नेता शिबू सोरेन थे तथा उनके समर्थन में विनोद बिहारी महतो तथा ए. के. राय थे।[18] झारखंड मुक्ति मोर्चा का प्रथम अधिवेशन 1983 धनबाद में हुआ।[19] जिसमें विभिन्न तरह के लक्षण का निर्धारण करते हुए झारखंड अलग राज्य के रूप में बनाने को लक्षित किया गया। साथ ही संविधान के द्वारा यह बताया गया कि यह संगठन जिससे छात्रों, युवाओं, महिलाओं, श्रमिकों तथा शोषितों की स्वतंत्र इच्छा हुआ जिसका उद्देश्य झारखंड राज्य की स्वायत्तता प्राप्त करना है।

इस तरह आंदोलनकारियों के लंबे संघर्ष तथा कई शहादतों की पश्चात् 15 नवंबर 2000 को बिहार रिकॉग्निशन एक्ट के तहत झारखंड भारत का 28वां राज्य के रूप में उभरकर सामने आया।[20]

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र से यह निष्कर्ष निकलता है कि कई वर्ष पहले से ही छोटानागपुर, संथाल परगना क्षेत्र में यहां की जनजातियों का अस्तित्व था। इस क्षेत्र में लोग अपनी प्रशासनिक स्वायत्तता और भाषा अपनी संस्कृति की पहचान के मुद्दे पर जागरूक थे। इस शोध से यह भी स्पष्ट होता है कि समय के साथ–साथ यहां की जनता ने अपना आवाज बुलंद किया तथा अपने हक की लड़ाई के लिए एडी चोटी का जोर लगाते हुए कई बलिदान भी दिए तथा जनजातीय लोगों के हितों के रक्षा के लिए अलग राज्य निर्माण पर जोर दिया जिसके परिणाम स्वरुप झारखंड राज्य 15 नवंबर 2000 को अस्तित्व में आया।

संदर्भ सूची

1. हेमंत, (2008) *झारखंड,* प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, पृ. 16।
2. दत्त, बलवीर (2014) *कहानी झारखंड आंदोलन की इतिहास से साक्षात्कार,* क्राउन पब्लिकेशन, रांची, पृ. 6।
3. वीरोत्तम, बी. (2000) *झारखंडः इतिहास एवं संस्कृति,* बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, पृ. 388।
4. इकोनामिक एंड पॉलीटिकल वीकली जिल्द – 11।
5. विद्यार्थी एल. पी. और सहाय के. एन. (1976) *डिनामिक्स ऑफ ट्राइवल लीडरशिप इन बिहार,* किताब महल, इलाहाबाद, पृ. 89।
6. लाल मनोहर (1983) *द मुंडा एलिट,* अमर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 37।
7. महतो, शैलेंद्र (2015) *झारखंड की समरगाथा,* दानिश बुक्स, दिल्ली, पृ. 532।
8. पूर्वोक्त, कहानी झारखंड आंदोलन की, पृ. 592।
9. पांचवा केन्द्रीय महासम्मलेन राजनैतिक तथा संगठन रिपोर्ट माक्सवादी समन्वय समिति, बोकारो, पृ. 23।
10. प्रसाद पप्पू हरी (2022) अतीत की पृष्ठभूमि में कामरेड ए० के० राय माक्सवादी समन्वय समिति, धनबाद, 22 अप्रैल 2022, पृ. 8।
11. पूवोक्त, महतो, शैलेंद्र *झारखंड की समरगाथा,* पृ. 294।
12. सिन्हा, अनुज कुमार (2020) *दिशोम गुरु शिबू सोरेन,* प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 20।
13. इक्का, विलियम, एवं सिन्हा, आर. के. (2004) *डॉक्युमेंट ऑफ झारखंड मुवमेंट,* एंथरोपोलोजीकल सर्वे ऑफ इंडिया, कोलकाता, पृ. 23।
14. खलखो, आभा, (2003) *एम्स ,एंड एचीवमेंट ऑफ झारखंड मुक्ति मोर्चा (1973–2000),* प्रोसेडिंग्स ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, वाल्युम – 64, पृ. 64।
15. तलवार, वीर (2017) *भारत, झारखंड आंदोलन के दस्तावेज,* नाबारुण पब्लिकेशन, उत्तर प्रदेश, पृ. 213।
16. मिंज बिशप (2014) *डॉ. निर्मल, कहानी आदिवासी राजनीति की,* झारखण्ड झरोखा पब्लिकेशन, रांची, पृ. 51।
17. JMM संविधान, पृ. 3।
18. JMM संविधान, पृ. 2।
19. बिहार रिकोग्निशन एक्ट 2000, पृ. 30।
20. द टाइम्स आफ इंडिया 16 नवंबर, 2000, पृ. 3।

––==00==––